सजदा

सूफी गज़लें

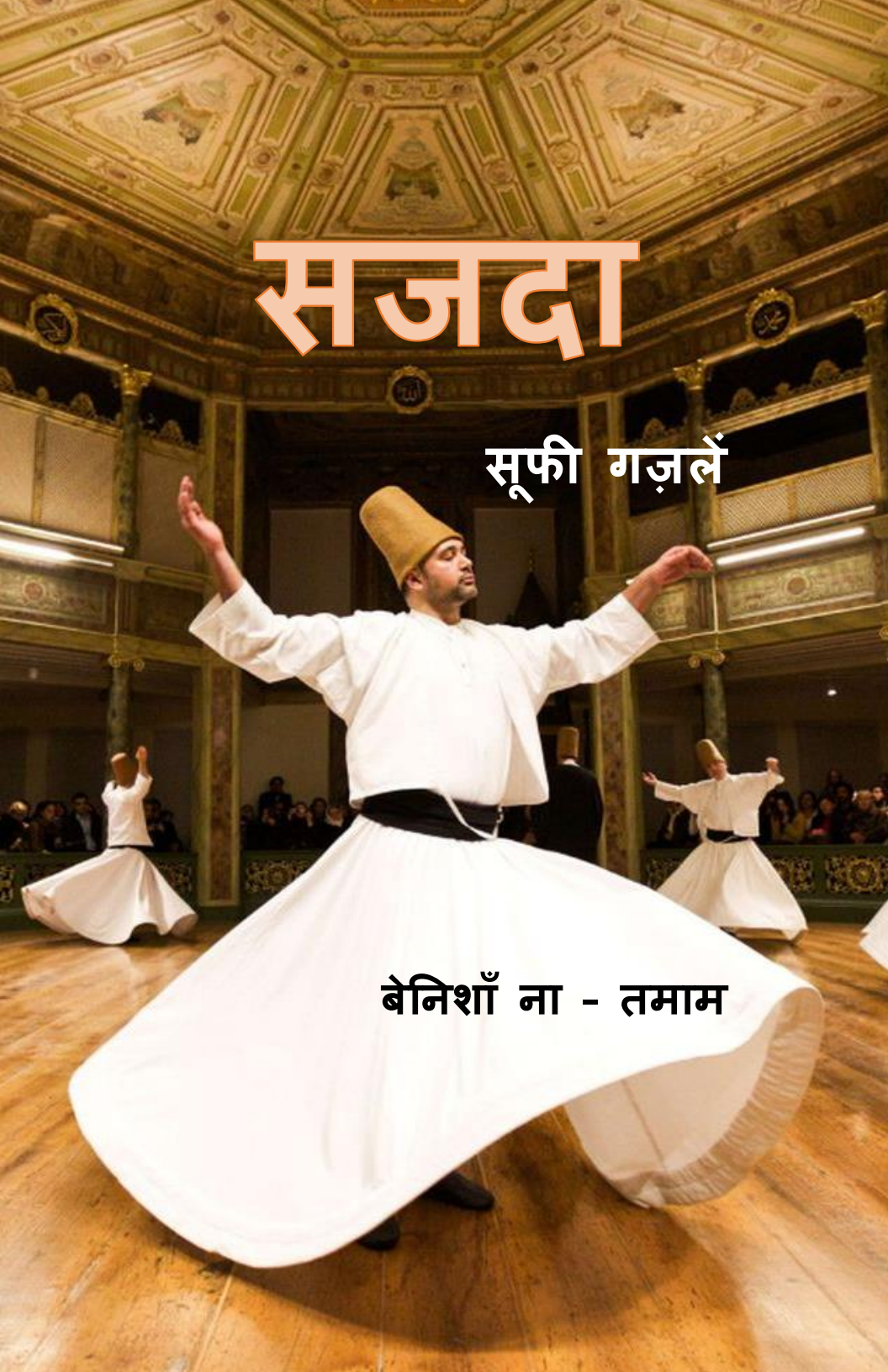

बेनिशाँ ना - तमाम

बेनिशाँ ना-तमाम

बेनिशाँ ना-तमाम का असली नाम योगेश कुमार है। ये पिछले 20 वर्ष से कनाडा निवासी हैं।

इसके पहले आप भारत में पढ़े, इंजीनियर बने व भारत में नौकरी की।

बेनिशाँ ना-तमाम ने उर्दू की पढ़ाई नहीं की, न ही वे उर्दू लिपि पढ़ - लिख सकते हैं।

आपकी गजलों की रचना सूफियाना तरीके पर है। उनके शब्दों में गजलें लिखना उनके लिए "इबादत का तरीका है"। जीव व ईश्वर के बीच की वार्ता है।

अनुक्रमणिका

1. परवाज़ हो गज़ब की मेरी.....1
2. न मरने का खौफ है.....2
3. या इलाही 3
4. आशियाँ हस्ती का मेरा 4
5. कैसा पुरनूर और रोशन.....5
6. मिलना ना हुआ उनसे 6
7. सिर रख दे चौखट पर अपना 7
8. पनाह मिली इस जिंदगी में 8
9. दिल को सुकून मिल गया.....9
10. लुट गया अब काफिला.....10
11. अच्छा हुआ राजे हक.....11
12. जलने के सिवा परवाने 12
13. बे इल्म कहकर तुमने मेरा.....13
14. नाम मुहब्बत का अब.....14
15. दिल यह तेरा मुझ पर आना 15
16. साथ है तेरा तो बेफिक्र हूँ.....16
17. तर्क कर दी जब ख्वाहिशें.....17

18. जब भी हुआ खामोश.....18
19. घायल होके घूमा किया.....19
20. इशरत है परवाने की 20
21. जलवे तेरे जितने देखे.....21
22. तूर को तो फूँका तूने.....22
23. जिनसे गले आप मिले.....23
24. झूम के जब इस.....24
25. कैसे बताऊँ हालतें अब.....25
26. बिकाऊ मैं था नहीं क्यों.....26
27. खोल दिए निहाँ राज़ 27
28. कुछ तो हो मेरी तरफ 28
29. अब तो पिला दे साकिया.....29
30. मैं रहा न खुद में यहाँ.....30
31. उम्मीदें तमाम बांध कर.....31
32. सिर सौंपने पे नाज़ है.....32
33. उनको पाने की कोशिशें.....33
34. कुछ ही रातें बची हैं मेरी 34
35. तै किये हज़ार मुकाम.....35
36. ज्यादा कुछ तो खबर नहीं.....36

37. दर्द मेरी जीस्त का.....37
38. निकल के आया हूँ मैं.....38
39. मेहरबाँ नज़र जो पड़ी थी उनकी 39
40. जज़्बो सुलूक के मरहलों से 40
41. खूबसूरत इस सफर में.....41
42. सुकूते मार्ग में लरज़ती 42
43. मेरी सलाहियत को न देख 43
44. वो चले आए महफ़िल में मेरी.....44
45. मैं नहीं तू नहीं 45
46. इधर ये बद आमाल मेरे.....46
47. उसके हसीन जमाल में 47
48. नाबीना जब भटकता रहा 48
49. कैफ़ियते मुहब्बत कोई.....49
50. महशर खिराम और महवश है.....50
51. जिंदगी जीने का मेरा.....51
52. मेरे फना हो जाने की.....52
53. खताएं मेरी माफ कर.....53
54. चल पड़ा हूँ मजबूत कदम.....54
55. तबाह कर के रख दिया.....55

56. बार बार उन्हें देखना 56
57. हर लमहा तुम्हारी तड़प में.....57
58. तुम्हारे दरस का रोग लिए.....58
59. अंजुमन के शोर में.....59
60. राहगुज़र तसव्वुफ का जनाब 60
61. कुर्बते पैहम में हूँ फना.....61
62. पंछी हूँ लाहूती का मैं 62
63. मेरा ही तो कुसूर था 63
64. बज्मे निगाराँ छोड़ दी.....64
65. जादूई आँखों ने तेरी 65
66. एक और शिकार हो गया 66
67. निकलेगा इक जुलूस.....67
68. वादा वो करते गये 68
69. तेरी अताओं पे निसार 69
70. सिर कटा मकतल में मेरा 70
71. खुमो सागर खुल गए हम पर 71
72. तकवा का सिर पर ताज लिए.....72
73. या इलाही कर ले शुमार.....73
74. ले आया है शौके दीद 74

75. सातों आसमानों की उड़ान 75
76. लाख करें हम गलतियां.....76
77. रज्मे खैरो शर में बेवजह क्यों 77
78. निकला हूँ नाम लेकर तुम्हारा.....78
79. कहने सुनने के भी परे.....79
80. जब ख्वाहिश हुई मकबूल मेरी 80

1. परवाज़ हो गज़ब की मेरी

परवाज़ हो गज़ब की मेरी ऊँची उड़ान हो
जो कही सुनी न गई वो दास्तान हो

आस्माँ भी रो पड़े सुनकर मेरी बातें
खुलूस और सच्चाई से तर मेरा बयान हो

दौरे अजल से आज तक दे पाया न कोई
तेरा निजाम हो और मेरा इम्तिहान हो

दिल कहीं लगता नहीं नई जगह ढूँढिए
जमीं को खैराबाद मकीं आसमान हो

बहुत वक्त हुआ कोई हादसा नहीं हुआ
तिरछी नजर हो तेरी दिल लहूलुहान हो

दिल में तड़प हो बेशुमार कहीं और चल पड़ें
दूर कहीं आस्मान में मेरा मकान हो

हर पल उनकी याद हो हर सिम्त जिक्र हो
आँखें नम दिल उदास बेनिशाँ पहचान हो

परवाज़ - उड़ान, अजल - सृष्टि, प्रारंभ - निजाम हुकूमत,
खैराबाद - विदा, हफ्त - सात, सिम्त - दिशा

2. न मरने का खौफ है

न मरने का खौफ है न जीने का जोश है
बेखुदी के बाद मुझे अब आया होश है

ना उम्मीद सा होकर चला जा रहा हूँ मैं
हर आरज़ू हर मुद्दआ तमन्ना खामोश है

दिल पर लिए हुए मोहब्बत की एक चोट
नजर जिधर है पड़ी हर समाँ मदहोश है

ऐसा मिला है होश जान हो गई निसार
इस होश के जलाल ने मुझे किया बेहोश है

रूह कर रही उड़ान और बरस रहा है नूर
जन्नत नहीं जनाब ये उनका आगोश है

मयख्वार नहीं हूँ मैं फिर क्यों होश उड़ गए
हो ना हो जरूर तेरी निगाहों का दोष है

तेरा रास्ता जुदा तेरी मंजिल भी जुदा
मौजे हयात लूट 'बेनिशाँ' तू सरफ़रोश है

मयख्वार - शराब पीने वाला, मौजे हयात - जिंदगी के मजे

3. या इलाही

या इलाही तोड़ दो जंजीर हस्ती की मेरी
चूर कर दो खाक कर दो हर ईंट बस्ती की मेरी

बातिनी बुतों को तोड़ मिटा दो मेरे निशाँ
आदत ये अजीब है बुतपरस्ती की मेरी

राख हूँ और खाक हूँ तिफ़्ल हूँ गर्क हूँ
नाकाम है सब कोशिशें सरपरस्ती की मेरी

बाम तक उड़ जा के रहना फितरत मेरी है नहीं
है कोई जो रोक पाए उड़ान लाहूती की मेरी

नाव मेरी टूटी हुई और बेकराँ मझधार है
गोशा गोशा बयाँ करता दास्ताँ शिकस्ती की मेरी

जीत लूँ गर सारी दुनिया फिर भी हूँ दर का गुलाम
काश कोई कह भी पाए सरगुजश्ती की मेरी

गुमकदा हूँ उस ग़ैब में इस फैज़ में उस कैफ में
कर लो दीद सब 'बेनिशाँ' चश्मे मस्ती की मेरी

बातिनी - आंतरिक, तिफ़्ल - बच्चा, लाहूती - शून्य, बेकराँ - अथाह, सरगुजश्ती - आपबीती

4. आशियाँ हस्ती का मेरा

आशियाँ हस्ती का मेरा जला दे बागबाँ न पूछ
खेल खत्म कर दे मेरा मेरी दास्ताँ न पूछ

बेजार हूँ तैयार हूँ शौके शहादत है मुझे
मिस्मार कर दे तोड़ दे जला मेरा मकाँ न पूछ

जब न तेरी बात मानी करी गुलामी नफ्स की
देख देख कर मुझको तू हुआ था हैराँ न पूछ

कटता है मुश्किल से मेरा भारी है हर एक दिन
लेगा कब अपनी गोद में मुझे ए आसमाँ न पूछ

बैठा हूँ इंतजार में रोजे अज़ल से आज तक
तू देख रोजे कयामत होगा कब मेहमाँ न पूछ

बस एक तेरी वजह से अब चल रहा मेरा काम है
मेरे बदअमालों का तू ही तो है राजदाँ न पूछ

आजमाईशों से खौफ है मुश्किलों से भी खतरा बड़ा
इस नाकाम 'बेनिशाँ' का कितना है इम्तिहाँ न पूछ

मिस्मार - ध्वस्त, नफ्स - मन, रोजे अज़ल - सृष्टि प्रारंभ, आजमाईशों - परिक्षाओं

5. कैसा पुरनूर और रोशन

कैसा पुरनूर और रोशन यह मेरा ख्वाब है
कमाल की है बेखुदी गजब का सैलाब है

खुल गए सब रास्ते मैं तो चलता ही गया
तुम में फना हो जाने को हर रग बेताब है

सुना है उतरेगा नूर तुम्हारे दयार में
मस्तों की महफिल का भी अपना आदाब है

मौका है आज तो अब पी भी लो बेनिशाँ
गैब से उतरी हुई ये अजब शराब है

मुझे तो मालूम है तुम कुछ भी कहो चाहे
करम उनका अब मुझ पर बड़ा बेहिसाब है

अजाब सब मिट गए जब सुबह को हुआ तुलू
तारीकियों में निकल पड़ा अब ये आफताब है

तेरी भी बन आई है अब इस कायनात में
उनकी बज्म में 'बेनिशाँ' तू कामयाब है

गैब - ईश्वरीय, तुलू - उदय

6. मिलना ना हुआ उनसे

मिलना न हुआ उनसे रस्मे फुरकत हो गया
उसको हर पल देखना मेरी जरूरत हो गया

आह भी निकली नहीं जाने ये कैसे हुआ
सिर कटा कदमों में तेरे खेल शहादत हो गया

पास आते भी नहीं और इशारा भी नहीं
भूल जाना भी उसको दिल की हसरत हो गया

एक खामोशी सी यहाँ पसरी हुई है रात दिन
शोर सारे जहां का अब दिल की फुर्सत हो गया

बहुत दिनों कूचे में उसके आना जाना था मेरा
निगाह मुझ पर ऐसी डाली बुलंद अज्मत हो गया

मुझे तो कुछ पता नहीं शायद तुम्हें हो खबर
इल्म मुझको ऐसा बक्शा जानों मार्फत हो गया

चलो यह तो अच्छा हुआ अच्छी किस्मत थी मेरी
नाम मेरा अब बेनिशाँ शामिले अकीदत हो गया

फुरकत - एकांत, मारफत - ज्ञान

7. सिर रख दे चौखट पर अपना

सिर रख दे चौखट पर अपना फिर कूए इश्क में होना है
इश्क है मियाँ कोई खेल नहीं काँटों की सेज पर सोना है

न हो मुरव्वत कभी जान से लेके हथेली पर घूमो
जान फना तो करनी होगी क्या पाना का खोना है

गोया ये बहुत है मुश्किल कैसे ये हो पाएगा
मेरी तो भरपूर है कोशिश उनके जैसा होना है

प्यार है अगर तुम्हें उनका पाना इतना तो बस कर लेना
बहुत सुबकना बहुत बिलखना अंदर-अंदर रोना है

लोगों ने तो जान भी दे दी क्या तुम्हें कुछ खबर नहीं
मियाँ मुहब्बत खेल नहीं चैन तो दिल का खोना है

इश्क तुम्हें जब हो जाएगा इतना होगा अपने आप
नाम फिर उनका दिन और रात साँसों साँस पिरोना है

खेल तो अब ये है फूलों का बगिया भी है फूलों की
बेशक समझ लो 'बेनिशाँ' कांटो को नहीं बोना है

मुरव्वत - स्नेह

8. पनाह मिली इस जिंदगी में

पनाह मिली इस जिंदगी में तेरी जात में
मसले सारे रवाँ हुए इक इनायात में

दिल भी तेरा जान भी तेरी अब कुछ बाकी नहीं बचा
सजा लो अब इस साइल को तुम अपनी खैरात में

सारा शहर तो हुआ दीवाना गजब नजारा दिखता है
तुमसा कोई हँसी भी होगा जानम कायनात में

ले देकर बचा था बस दिल वह भी तुम ने लूट लिया
पामाल और कँगाल हो गया तुम्हारी करामात में

वैसे तुम सब कुछ हो मेरे तुम्हारे सिवा है मेरा कौन
क्या मैंने तुम्हें खुदा है माना खाली रिवायात में

कैसी गजब की रात थी वो जब तुमने थी मेहर करी
नूर का चाँद था छटक रहा अश्कों की बारात में

सब के सब मामूर थे फिर भी सब के सब थे बेहोश
बेनिशाँ पड़ गए हो अब तुम क्यों मुश्किलात में

पामाल - बर्बाद, मामूर - आदेशित

9. दिल को सुकून मिल गया

दिल को सुकून मिल गया रोशन क्या महफिल हुई
रँगीन फिजाएँ हो गई और रूह क्या बिस्मिल हुई

सब कुछ तो है बस मैं तुम्हारे जाने कैसा है जादू
तेरे कमालात देख देख कर अक्ल क्या गाफिल हुई

एक दिन मायूस होकर उसने मुझको तो देखा यों
चोट खाई थी जीस्त मेरी अब तो क्या काबिल हुई

वाह क्या अंदाज है तेरा और तेरी अय्यारी है
जमाल तेरा जो मैंने देखा तबीयत क्या माइल हुई

कैसे तुम्हारी हो मर्जी पूरी कैसे बस तुम शाद रहो
तुम्हारी खुशनूदी तो अब बस मेरी क्या मंजिल हुई

कभी - कभी तो करम वो अपना मुझ पर भी कर देते हैं
निगाहें जो मुझ पर ऐसी डाली जीस्त क्या कामिल हुई

तेरा मेरा जो रिश्ता ऐसा सबसे आला हुआ जहूर
बेनिशाँ दिल की कश्ती को इनायत क्या साहिल हुई

बिस्मिल - घायल, खुशनूदी - प्रसन्नता

10.लुट गया अब काफिला

लुट गया अब काफिला बेसूद हस्ती का मेरा
बयाँ कैसे होगा हाल दिल की मस्ती का मेरा

दो दीवाने कूद पड़े जन्नत के मैदान में
इसी तरह से शुरू हो गया दौर मस्ती का मेरा

दिल भी तुम हो आग भी तुम खाक मुझे फिर कर डाला
कैसे बयाँ करूँ किस्सा तुमको सरगुजश्ती का मेरा

क्या गजब दीदार था उसका चारों तरफ मचा था शोर
लुट गया जहान पूरा सरपरस्ती का मेरा

कोई दूसरा है नहीं आका तुम्हारे सिवा है कौन
सौंप दिया तेरे कदमों में भार कश्ती का मेरा

जब तौहीद पे हो गया अकीदा सारे बुत थे हुए रवाँ
टूट गया हुबाब नशीला बुतपरस्ती का मेरा

जब तेरी सूरत को तो देखा था हर एक जात में
अजीज हुआ बेनिशाँ को बाशिंदा बस्ती का मेरा

सरगुजश्ती - आपबीती, तौहीद - अद्वैत, अकीदा - विश्वास

11.अच्छा हुआ राजे हक

अच्छा हुआ राजे हक खुद ही अफशाँ हो गया
इस तरह से बेनिशाँ पर एक अहसाँ हो गया

वल्लाल क्या जमाल तेरा तेरी दूर अंदेशियाँ
दीदार का दीदार हुआ और मेहमाँ हो गया

जादू मुझ पर ऐसा डाला सब लूटा और छोड़ दिया
मुतमइन कदमों में उसके मेरा ईमाँ हो गया

वाह तेरी तस्वीरे जात कैसा तेरा जादू है
टूटकर वजूद मेरा उस पर कुर्बा हो गया

एक ही मिट्टी के थे हम दोनों में कुछ फर्क नहीं
गैरियत सारी फना हुई अब जिस्मों जाँ हो गया

जिक्रे दुनिया जब भी आया जब भी देखी दौड़ ए हविस
मैं तो मुब्तिला हुआ नहीं पर वो परेशाँ हो गया

दोनों फिर जब एक हो गए कुछ भी फर्क नहीं रहा
धीरे - धीरे 'बेनिशाँ' मैं तो उसका राजदाँ हो गया

गैरियत - गैर भाव

12.जलने के सिवा परवाने

जलने के सिवा परवाने का कोई काम नहीं है
जब तक न फना हो जाऊँ बस आराम नहीं है

लौटे हो तुम जहाँ से अब मुझे तो कुछ करो बयाँ
क्या फिदाइयों के बीच मेरा नाम नहीं है

फिर रहा हूँ डगर - डगर कासिद को फिरे ढूँढता
मकतल से मेरे लिए आया क्या पैगाम नहीं है

ईसा को तो फना किया फिर दिया सुकरात को
जहर बुझा हुआ मेरे लिए क्या कोई जाम नहीं है

मैंने तो सर रख दिया क्या उनको खबर नहीं हुई
हस्ती का तुम में फना होना क्या इनाम नहीं है

सरफरोशों की भीड़ भाड़ में ये तो जान लीजिए
दावा है मेरा मुझसा कोई यहाँ गुमनाम नहीं है

कैसे यह खबर फैल गई क्यों सबको तो लगा पता
सब जान गए 'बेनिशाँ' जैसा तश्नाकाम नहीं है

तश्नाकाम - प्यासा

13.बे इल्म कहकर तुमने मेरा

बे इल्म कहकर तुमने मेरा नाम तो लिया
दीवाना ही कर देते तो कुछ और बात होती

सरेराह सरेआम मुझको है जब डाला तुमने लूट
तोहफा ए मौत दे देते तो कुछ और बात होती

दानिश और अक्ल ने किया काम मेरा सभी तमाम
बेहतर तो था कि वहाँ मेरी बेखुदी भी साथ होती

तर्क ताल्लुक कर भी डालो झगड़े सारे हुए रवाँ
घुल घुल के क्यों मरे रोज मुझे गम से निजात होती

शौक नहीं है जीने का मौत की आगोशी है
शबे वस्ल भी मिल जाती तो कुछ और बात होती

जितना सफर में साथ मिला वो किस्मत की बात थी
काश खत्म सफर होने के पहले मेरी वफात होती

कहीं तो खुशी का जलसा था कहीं तड़प की थी बारिश
बेनिशाँ खाके जनाना होता फिर शह और मात होती

तर्क ताल्लुक - संबंध त्याग करना

14.नाम मुहब्बत का अब

नाम मुहब्बत का अब तो मुझसे ही अयाँ होगा
कूचे में उनके कटा हुआ मेरा गिरेबाँ होगा

दरो दीवार नहीं माँगता कैदे कफस नहीं
जमीं तो होगी नहीं अर्श पे मकाँ होगा

कदमों में रखा सर मिट गए सब अजाब
इसके बाद अब न कोई इम्तिहाँ होगा

दिल में कसक पुर है सोजो गुदाज से
चेहरा खिला हुआ ऐसा कौन परेशाँ होगा

मकतल में साकी के कदमों में सिर कलम
आज के बाद मेरा नहीं कोई नामोनिशाँ होगा

दुनिया की सब नवाजिशें मुबारक गैरों को हों
देने वाला तो अब मुझे मेरा आसमाँ होगा

बहुत वक्त हुआ ढूँढता कोई बता तो दे मुझे
राजे हस्ती जो खोले 'बेनिशाँ' का राजदाँ होगा

अयाँ - प्रगट, गिरेबान - गर्दन, कैदे कफस - शरीर की कैद, अज़ाब - कष्ट, मकतल - कत्लगाह, नवाजिशें - आतिथ्य

15.दिल यह तेरा मुझ पर आना

दिल यह तेरा मुझ पर आना बारिशें फैजान की
जाने कैसे कट गई सदियाँ इम्तिहान की

धुंधलके मैं से आकर एकदम रोशन हो गए
फिर करीबी हो गए खूब जान पहचान की

ख्वाबों के लगे थे मेले मजे थे रोज के
नींद में जाने कहाँ गया जाने कहाँ उड़ान की

अस्ले उनके अजब गजब खंजर था न तीर
फकत अदाओं ने तो मेरी जीस्त लहूलुहान की

सितारों की दुनिया से दूर मेरा बन गया मुकाम
वल्लाह कैसा जादू उनका क्या बात है शान की

कातिलाना अदाएँ थी और क्या गजब निगाह की
ले जाकर मुझको खला में चाक गिरेबान की

कभी-कभी मिलते हैं ऐसे लम्हे शानदार
किस्मत जगी बेनिशाँ जब जान कुर्बान की

फैजान - कृपा, जीस्त - जीवन, खला - शून्य, चाक गिरेबान - अहम से शून्य

16.साथ है तेरा तो बेफिक्र हूँ

साथ है तेरा तो बेफिक्र हूँ दोनों जहाँ से मैं
पेश करूँगा सर चाक कर अपने गिरेबाँ से मैं

रास्ता है मेरा ज़ुदा अब उनकी तलाश है
गुज़र के निकल जाऊँगा दीनो मकाँ से मैं

रुकेगा नहीं ये काफिला चलता सुबहो शाम
दूर कहीं हो जाऊँ मकीं हफ्तआसमाँ से मैं

शहादत का खेल है मौका बेमिसाल
आसानी से गुज़र जाऊँगा सभी इम्तिहाँ से मैं

बहुत दिनों में मिले हो तुम कोई गैर नहीं यहाँ
खोल दूँगा राजे दिल हसीं मेहमान से मैं

बातें मेरी सब सुनी थोड़ा मुस्करा दिए
इक बाढ़ थी और बह गया पुर फैज़ान से मैं

हम नफ़स मुझे मिला खुल गए सभी राज
'बेनिशाँ' पर्दा करूँगा क्यों किसी राज़दाँ से मैं

सर चाक - सिर कटाना, हमनफस - एक से मन वाला,
राजदां - राज रखने वाला

17.तर्क कर दी जब ख्वाहिशें

तर्क कर दी जब ख्वाहिशें सारे जहान की
बरस पड़ीं तब नियामतें आसमान की

मुझको नहीं ज़रुरत अब कौनो मकान की
घर की शक्ल हो गयी है सेहरान की

वीरानी हो या घर हो दोनों तो हैं यकसाँ
कहीं भी नहीं ज़रुरत है शौकतो - शान की

दिल रम गया है फकीरी के आलम में दोस्तों
फ़िक्र अब नहीं रही मुझको जिस्मो - जान की

न ख्वाहिश न यास है न कोई इंतज़ार
न उम्मीद है अब मुझे किसी के अहसान की

दीवानगी पर मेरी सब करने लगे हैं रश्क
अजब है कहानी मेरी अनोखी दास्तान की

रास्ता मेरा जुदा है कैफ है मेरा जुदा
'बेनिशाँ' की समझ ने तो अक्ल हैरान की

कौनो मकान - संसार, सेहरान - रेगिस्तान

18.जब भी हुआ खामोश

जब भी हुआ खामोश उनसे बात हो गयी
उनकी हरेक बात एक मुलाक़ात हो गयी

सहल थे सब मामले उधर कोई कमी न थी
खामोशी जब गई ठहर करामात हो गयी

वो पास थे खुश भी थे मामले गज़ब थे
बस दिल काबू में रह पाए मुश्किलात हो गयी

दुनिया की पागल दौड़ में दिल रहे यकसाँ
खामोशी की तो इन दिनों रिवायात हो गयी

सरे राह इंतज़ार कर नज़रें लगीं रहीं
देखते ही देखते जाने कब रात हो गयी

जाने किसकी दुआ लगी समाँ बदल गया
मेरे सहन में नूर की बरात हो गयी

हिसाब साफ कर दिया कुछ बाकी नहीं रहा
सिर सौंप दिया ओ 'बेनिशाँ' खैरात हो गयी

सहन - आंगन, खैरात - दान

19.घायल होके घूमा किया

घायल होके घूमा किया तू जो उनकी महफ़िल तो गया
तीर हो गया आर पार देखो मेरा दिल तो गया

क्या बात हुई जो बात हुई क्या वर्क गिरी जो वर्क गिरी
सब कुछ लूट जाने के बाद सब फिर मिल तो गया

क्यों गया था शहादत को घर में क्या तुझे चैन न था
जाने कितनों को क़त्ल किया तब कहीं वो कातिल तो गया

राज़ उसका मालुम है मुझे कहो तो मैं अफ्शां कर दूँ
राजे हक़ के मसले को ढूँढने को सँगदिल तो गया

चल पड़ा था मैं तो अकेला खुश भी था और मस्त भी था
मेरे अलग होने के पहले संग मेरे वो साहिल तो गया

बड़ी मुबारक है ये महफ़िल नूरानी यहाँ का आलम है
जिस जिस को ये फैज़ मिला महफ़िल से खुशदिल तो गया

बहुत हुआ अब बहुत हुआ यारो अब तो बस भी करो
जीस्त का काफिला 'बेनिशाँ' तेरा अब आखिरी मंज़िल तो गया

वर्क - बिजली, साहिल - किनारा

20.इशरत है परवाने की

इशरत है परवाने की जान को ख़ाक कर जाना
रहे न कोई निशाँ बाकी सब कुछ राख कर जाना

धीरे जले या यकदम ही बात तो बस एक यकसाँ है
दिल का एक ही मसला है आतिशे ग़मनाक कर जाना

बेखुदी ऐसी छाई है बेहोशी हर सू तारी है
जान जब तक है ये बाकी बड़ी मुश्किलात मर जाना

लुटा मुसाफिर हुआ सफर में कहकहे लगा के हँसता है
तमन्नाएँ अब न रही बाकी जान सौगात कर जाना

एक प्यासा तेरी चौखट पे दर्द के नग्मे गाता है
रहम मालिक का गर हो इक इनायात भर जाना

आशियाँ जला तो ठीक हुआ नई एक सुबह तो हो गई
आखिर दुश्वारियों का मेरे तारीकी रात उबर जाना

अँधेरी सुरंगों में हुई आमद रौशनी का फिर हुआ हुजूम
बड़ी किस्मत से 'बेनिशाँ' फैज़ो कमालात भर जाना

इशरत - पूर्णता, परवाना - पतंगा

21.जलवे तेरे जितने देखे

जलवे तेरे जितने देखे जीस्त मेरी हैरान हुई
होश का तो पता नहीं तश्ना तश्नाकाम हुई

होशोहवास में जब था बेखुदी में मिली पनाह
बेखुदी की बरकत से अजमत भी नीलाम हुई

हँसता हूँ रोने वालों पे रोता हूँ हँसने वालों पे
पर्दा सच का उठ न सका कोशिशें सब नाकाम हुई

एक हिजाब था वो फ़ना हुआ शोला - रू हुई अफशाँ
तुम क्या जो नज़रों में आये जीस्त मेरी परेशान हुई

दिल में तो बसते थे मेरे हर दौर वस्ल का आलम था
दूर क्यों अब चले गए वक्त हुआ दुआ सलाम हुई

नज़्ज़ारा था तो पैहम रौशन था ज़र्रा ज़र्रा
ताज़्ज़ुब के भी होश उड़े दानिश बड़ी हैरान हुई

जाने कब से भटका था लौट के फिर घर पर आया
कहानी पूरी हुई 'बेनिशाँ' मुकम्मल दास्तान हुई

तश्नाकाम - प्यासा, अक्लो दानिश - बुद्धि

22.तूर को तो फूँका तूने

तूर को तो फूँका तूने इक नज़र के साथ
चिराग मेरा भी गुल कर दे इक नई सहर के साथ

ख़ाक कर बर्बाद कर दे मेरे सभी निशाँ
फना कर दे तन भी मेरा दिलो जिगर के साथ

मेरा न होना होना है होना तो एक मौजू है
तोड़ दे मेरे होने को इक नज़र के साथ

उसकी अज्मत को पाने को मौत का साथ जरूरी है
ख़तम कर अब किस्सा मेरा ज़ेरो ज़बर के साथ

फूँक दे मेरा आशियाँ जंबील में दे पनाह
इल्तिज़ा करता हूँ तुझसे बड़े चश्मे तर के साथ

नफ़स को वहाँ पहुँच नहीं सिर्फ हैरत है बाकी
जिंदगी का मिला तोहफा मरने की खबर के साथ

बेकरारी जाने गई कहाँ इंतज़ारी हुई फ़ना
खेल 'बेनिशाँ' का हुआ खतम तेरी रहगुज़र के साथ

आशियां - घोंसला

23.जिनसे गले आप मिले

जिनसे गले आप मिले उनकी ईद हो गयी
तलाश हक़ की थी जिन्हें उनको दीद हो गयी

शौक़ था दीदार का पर पर्दे पड़े हुए
झुकी पलकें जैसे खुली खत की रसीद हो गयी

बेहोशी का था आलम बेखुदी में हुआ क़याम
होश में आने की कोशिशें मेरी सब शहीद हो गयीं

पीछे पीछे लगा फिरता फिर भी था वो बेनियाज़
फिर इनायत की नज़र उनकी चश्मदीद हो गयी

अजीब सा इक दौर था मैं नहीं था कोई और
बेज़ार तबियत मेरी अब उनकी मुरीद हो गयी

नाराज़ तो अक्सर रहते थे ज़िद हमारी थी पुरजोर
समाँ कुछ बदला ऐसा बरकतों की खरीद हो गयी

हिसाब जब सब हो गए वो मुस्कुरा दिए
सारे फैसलों की 'बेनिशाँ' यूँ तक़लीद हो गयी

तक़लीद - अनुसरण

24.झूम के जब इस

झूम के जब इस कतरे में दरिया लहर लेने लगे
ज़र्रा ज़र्रा उनकी रहमत की खबर देने लगे

ज़िन्दगी की ये रिवायतें ये ज़माने का उसूल
तकिया हो जिस दुनिया पर फिर वो ज़हर देने लगे

तक़रीरें हों बड़ी बड़ी आखिर क्या हो फायदा
जब छोटे मुँह की कही बात भी असर देने लगे

जादू ऐसा कर डाला तीरे नजर का दांव चला
उनकी गली में हम तो फेरा शाम सहर देने लगे

ये तो निराली शान है कूचा ए मुहब्बत की लेकिन
जब ज़रा सी आवाज़ पर दीवाने सर देने लगे

दर पर पड़ा उनके जाकर जाने कब का मैं मोहताज़
पहले आँगन में दी जगह फिर वो घर देने लगे

बिक जाओ गली में उनकी अपना बना कर के तो देखो
बेसाख्ता देंगे खूब 'बेनिशाँ' जब वो अगर देने लगे

बेसाख्ता - अनवरत

25.कैसे बताऊँ हालतें अब

कैसे बताऊँ हालतें अब दिले मुतमईन की
खुल गयीं सिम्तें सभी उस रौशन ज़मीन की

न रंज है न है ख़ुशी न बेकद्री का ख़याल
दिल को अब परवा नहीं किसी नुक़्ताचीन की

बेगाना कोई तो है नहीं पर अपना कोई नहीं
गिलाजत देखो साफ़ हो गयी दिल के आवगीन की

राज़ अजब सा खुल ही गया गुम हुए सभी सवाल
बदल गयी है अब फ़िज़ा दिले ग़मग़ीन की

खौफ है न अब कहीं न अदावत है कोई
हिम्मतें अब बढ़ गयीं हैं खुद पर यकीन की

इस दिले मुस्तआर से ना उम्मीद सा हो चला
आदतें बदल गयीं हैं अब मुझ तमाशबीन की

ढूंढे कहीं मिलेगी नहीं ये रौशनी किसी सिम्त
दीद कर लो 'बेनिशाँ' तुम दिलरुबा हसीन की

मुतमईन - संतुष्ट, सिम्तें - दिशाएं, नुक़्ताचीन - छिद्रान्वेषी,
गिलाजत - गंदगी, आवगीन - बर्तन, अदावत - दुश्मनी,
मुस्तआर - मांगी हुई

26.बिकाऊ मैं था नहीं क्यों

बिकाऊ मैं था नहीं क्यों दुनिया में नीलाम किया
तमन्ना और ख्वाहिशों ने मुझको तो गुमनाम किया

उनकी अज़मत ने मुझ को नई जमीन दिखलाई
सजाओं से मैं हुआ बरी हासिले ईमान किया

हीरे को तो डाला बेच मैंने कौड़ियों के दाम
फिर भी उसने खरीद लिया कामिले इंसान किया

गुम सा फिरता था सेहरा में एक नाकिस की मानिंद
अपनी तवज्जोह से दी उरूज और मुझे हैरान किया

मुतमइन मुझे कभी न रखा कभी न रखा पुर सुकूँ
काम तो वो था करने वाला पर जग में मेरा नाम किया

रास्ते सब तंग हो गए गालियां भी थीं सारी बंद
अज़ाब सारे मिटा दिए ऐसा अहल अंजाम किया

इंतज़ार उसे मेरा बस सिर्फ एक हाँ का होता था
'बेनिशाँ' को सरे कूए मकतल उसने फिर कुर्बान किया

तवज्जोह - आकर्षण, मुतमइन - संतुष्ट, मकतल - कत्लगाह

27.खोल दिए निहाँ राज़

खोल दिए निहाँ राज़ मेरा तो काम कर दिया
आलमे अरवाह में मेरा कामिल मुकाम कर दिया

मुश्किलों की बरसात की फिर बरसा अब्रे करम
ऐसा उसने जादू फूँका खुद का गुलाम कर दिया

सल्ब कर ली ख्वाहिशें मेरी रहम फिर बरपा दिया
इक निगाहे जौक ने मुझको हैरान कर दिया

पर्दा ब पर्दा छुप गया परदे में थे राज़ अयाँ
मेरी हस्ती के बीचों बीच फिर उसने क़याम कर दिया

भागता फिरता था मैं उसकी नजर का बिस्मिल मैं
दुनिया की सब नियामतों को मेरे नाम कर दिया

कोई भला क्या जानेगा और कोई कहीं क्या मानेगा
अंदाज किसी को होगा क्या ऐसा अंजाम कर दिया

मैंने भी फिर आखिर मुतास्सिर हो बड़े शौक से
'बेनिशाँ' उसकी चौखट को देखो सलाम कर दिया

निहाँ - छुपा, आलमे अरवाह - परलोक, सल्ब - खींच लेना,
मुर्शिद - गुरु, मुतास्सिर - प्रभावित

28.कुछ तो हो मेरी तरफ

कुछ तो हो मेरी तरफ अल्ताफे नज़र भी
रुख कर लो इधर का आओ मेरे शहर भी

तवाफ़ सारी दुनिआ का करते तो हो माहो साल
निगाहे शौक का कुछ पड़े मुझ पर असर भी

दिल वीरान वीरान सा है मुद्दत बीत गई
बना डालो अब तो अपना डेरा मेरे घर भी

कभी तेरे निगाहो नाज़ से कुछ फैजान तो मिले
बड़ा शदीद बेलुत्फ है ये बेकरां सफर भी

दिले बियाबान मांगता है इक प्यार की निगाह
उचटती हुई सही ही करो नज़रें इधर भी

जान बंधी है डोरी से टूटने को बेकरार
कूच हम कर जाएंगे पड़े तुमको खबर भी

कबसे भटक रहे हैं हम सहरा में रात दिन
कभी तो बनेंगे 'बेनिशाँ' तेरे रहगुज़र भी

अल्ताफ - दयापूर्ण, तवाफ़ - परिक्रमा, शदीद - तीव्र

29.अब तो पिला दे साकिया

अब तो पिला दे साकिया कुछ गला मेरा तर तो हो
उचटती हुई भले पड़े ऐसी कोई नज़र तो हो

झुकता है नहीं कभी मजबूत है चट्टान सा
वजूद मेरा हो चूर चूर मुझ पर कोई कहर तो हो

इधर दर पर पड़ा है कौन देखो तो बाहर झांक के
मिटा दो अब होना मेरा शै मेरी मुख़्तसर तो हो

दोस्त किसी की है नहीं दुनिया मतलब की है यार
हाथ को जो रखे पकड़ ऐसा कोई हमसफ़र तो हो

बंजर और वीरान सा हूँ कबसे इंतज़ार मैं
रौशन और पुरनूर हो ऐसी मेरी सहर तो हो

वो मुझे देख न पाया था उसकी नजरों से दूर
दे दे जाम अब साकिया नज़र तेरी इधर तो हो

गुमनाम था हैरान था बदनाम था नाकाम था
कौन था वो 'बेनिशाँ' उनको कभी खबर तो हो

पुरनूर - प्रकाश पूर्ण

30.मैं रहा न खुद में यहाँ

मैं रहा न खुद में यहाँ कोई और मुकीम है
सात आसमानों के पार अब मेरी ज़मीन है

मुझमें तो कोई बात नहीं बस उसका है जलाल
जाने कैसा कहाँ है वो पर बड़ा करीम है

कैसे बयाँ करूँ मैं उसकी इनायतें बेशुमार
दिल है मेरा ये मेरा दिल बहुत मुतमईन है

हर घड़ी नया रँग है फैज़ान बरस रहा
अदाएं उसकी तौबा तौबा बड़ी तिलस्मीन है

लूट लिया है उसने मुझको अपने जमाल से
उसकी अदाएं उसका जलवा बहुत बेहतरीन है

जैसा भी हूँ मैं उसका हूँ मेरी किस्मत है बुलंद
सब हसीनों से भी आला मेरा हमनशीन है

अजब यहाँ पर भीड़ है गज़ब का है सैलाब
उसकी गली में 'बेनिशाँ' बस इक तमाशबीन है

मुकीम - स्थित, मुतमईन - संतुष्ट, सैलाब - बहाव

31.उम्मीदें तमाम बांध कर

उम्मीदें तमाम बांध कर आये कहाँ से हम
ख्वाहिशें इतनी समेट कर लाये कहाँ से हम

दिल तो अब लगता नहीं कोई जतन तो करो
क्यों छुपे रहते हैं खुद में निहाँ से हम

मेले में आए बिछुड़ गए कुनबे से बहुत दूर
भूल गए वो आसमान आये थे जहाँ से हम

हफ्त आसमाँ से भी दूर वहाँ है मेरा मकाँ
रहने लगे हैं दूर यहाँ अब इस जहाँ से हम

तिलस्म को तोड़ दिया और बड़ी मुद्दतों के बाद
खुश हैं सुखी हैं निकल कर उस समाँ से हम

दुनिया की ये आफतें और ये बदगुमानियां
दिल तंग और खस्ताहाल कुछ परेशां से हम

छूट गया घर मेरा इक कसक रह गई
याद आती है 'बेनिशाँ' आये थे जहाँ से हम

वालिदेन - माता पिता, बदगुमानियां - शंकाएँ

32.सिर सौंपने पे नाज़ है

सिर सौंपने पे नाज़ है शौके शहादत है मुझे
फाश तुम्हारा राज़ करूँ शदीद हसरत है मुझे

सुनता हूँ तुम तो हर शै में तो हो पर मगर
सबमें होकर और सबसे पर्दा यही शिकायत है मुझे

सौ हिजाबों में निहाँ पर हर जगह मौजूद हो
तुम्हें देखूं अहले नजर की अब ज़रुरत है मुझे

वसवसों से तेरे सारी दुनिया तो है मुब्तिला
पर किसी फंदे में नहीं आना ऐसी आदत है मुझे

बहुत दिनों से पेश्तर ख़ाली है ये मेरा मकान
इस हसीं कातिल से अब क्यों अदावत है मुझे

डालो तो मुझ पर भी कभी अपने करम की इक नज़र
तुम्हारी नज़रो करम से जानां बड़ी इनायत है मुझे

मैं तो बस नाकिस ही ठहरा पर तुम्हारा साथ मिला
तुम्हारे संग होने से 'बेनिशाँ' बड़ी शोहरत है मुझे

नाकिस - निकम्मा

33.उनको पाने की कोशिशें

उनको पाने की कोशिशें सब नाकाम हो गयीं
रूह जीस्त और जान सब लुहलुहान हो गयीं

खुद को खोकर पाया उनको कैसे करूँ बयाँ
मेरे वजूद की फितरतें उनकी गुलाम हो गयीं

मेरी अना की ही वजह से कुछ नहीं था सूझता
जब अपनी हस्ती को खोया यूँ पहचान हो गयी

मुझसे तो थे उन्हें ढेरों लेकिन मुझे न था कोई
करम फरमाने की अदा दिल की मेहमान हो गई

इल्म मुझमें है न कोई दानिशवरी से भी दूर
अपना लिया फिर भी मुझको रूह दिलोजान हो गई

मिला न मुझे ऐसा कोई समझे जो दिल का हाल
उसकी तमाम कोशिशों मौत का सामान हो गयीं

कभी ऐसा वक़्त भी आया कोई चली नहीं तरकीब
मेरी सारी आरजू 'बेनिशाँ तशनाकाम हो गयीं

जीस्त - जीवन, अना - अहंकार, बेसाख्ता - लगातार,
दानिशवरी - बुद्धि, तशनाकाम - प्यासा

34.कुछ ही रातें बची हैं मेरी

कुछ ही रातें बची हैं मेरी फिर नयी है ज़िन्दगी
दिल हुआ है मेरा चाक पाकर तुम्हें ऐ दिलनशीं

आसान नहीं है समझना किसी को इस ज़माल का
क़याम हुआ उसकी ज़ात में मकबूल हो गई बंदगी

कमी होंगी मुझ में लाखों फिर भी मैं तुम्हारा हूँ
अपने चाहने वालों से ठीक नहीं ये दिल्लगी

भटका हूँ जाने कब से मैं और मुद्दत से हूँ उदास
बिस्मिल हूँ और दूर हूँ लेकिन नहीं हूँ अजनबी

जलवे तुम्हारे देख कर अब दर पर तेरे हूँ आ पड़ा
ज़ख्म पर जख्म चाहे दे दो उठेगी नहीं मेरी ज़बीं

तलाश है तेरे साथ की और खोज है तेरे क़ुर्ब की
कभी तो शायद मुझको मिले ऐसी कोई वारफ्तगी

कब होगी मुझ पर नज़र कभी तो तुम वादा करो
टूटा और लाचार है अब 'बेनिशाँ' मेरा ये दिले हज़ीं

क़ुर्ब - करीबी, वारफ्तगी - स्वच्छंदता, दिले हज़ीं - दुखित मन

35.तै किये हज़ार मुकाम

तै किये हज़ार मुकाम नज़रे इनायत से तेरी
मिल गया रँग मुझको अब मुहब्बत से तेरी

पुर सुकून से बैठ गए बज्मे जाना में तेरी
फुरसतें सब रवाँ हुई अब तो फुर्सत से तेरी

फिक्रो अलम मिट गए दिल को मिल गया नया जाम
ग़ैब में जा कर हुआ मुकीम देख शोहरत से तेरी

मेरा तो कुछ बचा नहीं हो नज़रे इनायत और दुआ
चलते हैं सब काम मेरे अब तो ज़रुरत से तेरी

हर वक़्त की ये दौड़ भाग नहीं कहीं ठहराव है
चैन नहीं दिन रात को वजहे फुरकत से तेरी

क्यों मैं रोऊँ याद करूँ किससे करूँ मैं इल्तिज़ा
काम मेरे सब हो रहे हैं सिर्फ हसरत से तेरी

न तो मैं कुछ कर पाया न ही कुछ मैंने किया
अब रोज़ नए दीदार हैं 'बेनिशाँ' अज़मत से तेरी

फुरकत - अलगाव

36.ज्यादा कुछ तो खबर नहीं

ज्यादा कुछ तो खबर नहीं लेकिन ज़ाहिल नहीं हूँ मैं
पर इन दुनिया की रिवायतों का माइल नहीं हूँ मैं

बहुत चुप हूँ फना हूँ नहीं कहीं कोई शोर है
बहता हुआ दरिया हूँ जनाब साहिल नहीं हूँ मैं

अपनी जगह पर ठीक हैं शरीयत की मुश्किलें
देखो नज़र उठा के एक सँगदिल नहीं हूँ मैं

ना तो करी कुछ रियाज़त ना ही इल्म है कोई
इसलिए दीदार के तेरे काबिल नहीं हूँ मैं

जिसने चाहा दी अज़ीयत जिसने चाहा खेला दिल से
हज़ार चोटें खा कर बैठा पर बिस्मिल नहीं हूँ मैं

आखिर मेरी असलियत मुझ पर खुद ही अफ्शां हो गयी
अब ये बात साफ हुई कि कामिल नहीं हूँ मैं

देख लो अब मेरी जानिब रास्ते में हूँ पड़ा हुआ
कमज़ोर हूँ मैं बहुत 'बेनिशाँ' मुस्तकिल नहीं हूँ मैं

अज़ीयत - कष्ट, अफ्शां - प्रकट, मुस्तकिल - मजबूत

37.दर्द मेरी जीस्त का

दर्द मेरी जीस्त का दिल से बयाँ हुआ
रूह ऊपर उठती गयी और मैं फ़ना हुआ

राज़ सारे खुल गए नूर का सैलाब था
क्या हुआ मालूम नहीं और बे निशाँ हुआ

एक मुकाम ऐसा भी है जहाँ सब खामोश है
मेरी जुबाँ तो बंद हुई उसकी जुबाँ हुआ

कुछ भी तो होश नहीं कैफियत थी पुर कमाल
मक़बूलियत देने का मुझे इम्तिहान हुआ

कैसी ये परवाज़ थी अजब था निज़ाम
आसमानी सब से ऊँचा मेरा मकां हुआ

मेरे उनके बीच में कुछ फ़र्क़ नहीं रहा
ऐसा फ़ना हुआ मैं तो उनकी जिस्मोजाँ हुआ

बात असल है बतला दूँ वक़्त का पता नहीं
जो पूरी न होती 'बेनिशाँ' वो दास्ताँ हुआ

परवाज़ - उड़ान

38.निकल के आया हूँ मैं

निकल चुका हूँ अब हदे ज़िन्दगी मुस्तआर से
मिल चुका हूँ अपनी ज़ात से बड़े ऐतबार से

छोड़ आया हूँ अपनी हस्ती उन दरो दीवार में
सजदा रेज़ होकर आया हूँ आस्ताने यार से

लूट लिया मुझसे ही मुझको फिरउसने ये कहा
दिखने में तो लगते थे मियाँ तुम खरीदार से

मौत आई विदा हुआ पर कुछ ऐसा हुआ
पलकें मेरी खुली रहीं उसके इंतज़ार से

मेरी खोज ना करना लोगो मैं तो हो गया फना
बाद में खबर मिल जायेगी तुम्हें मेरे राज़दार से

मुझ मैं नहीं हूँ अब तो कोई और मुकीम है
निकल चुका हूँ मैं बेनिशाँ उसके करार से

अपने ज़माल में कैद कर के धीरे से ये कहा
क्यों लगते तो हो 'बेनिशाँ' तुम कुछ बेकरार से

मुस्तआर - मांगी हुई

39.मेहरबाँ नज़र जो पड़ी थी उनकी

मेहरबाँ नज़र जो पड़ी थी उनकी जैसे बर्फ पिघल गयी
रँग सभी चढ़ते गए और जीस्त बहल गयी

इक नज़र के खेल में देखो तो क्या हुआ
फिर कितनी मिली इनायतें उस एक पल में ढल गयीं

पहुँच के उसके कदमों पा में सब कुछ मिल गया
इसी तरह मेरे अरमानों की हसरत निकल गयी

एक नज़र का खेल था पुर नूर जमाल था
मेरे बद आमालों की गठरी उसकी नज़र से जल गयी

चुप होकर बैठा था मैं पर था थोड़ा बेताब
आसान हो गयीं सभी मुश्किलें जब किस्मत बदल गयी

दिल का मेरे हाल क्या हुआ जिक्र क्या करूँ
उनके कदमों पा को चूमूँ ये ख्वाहिश मचल गयी

अब तो मैं हूँ ही नहीं हाल मैं कैसे करूँ बयाँ
बिजली ऐसी गिरी 'बेनिशाँ' हस्ती सरापा जल गयी

इनायत - कृपा

40.जज़्बो सुलूक के मरहलों से

जज़्बो सुलूक के मरहलों से मुझको उठा दिया
मेरे वजूद का किस्सा सारा एक पल में सुना दिया

आइना मेरी ज़िन्दगी का था रूपोश खुल गया
मुकीम हुआ उसकी ज़ात में मुझको जगा दिया

महफ़िल में आते ही मुझ पर कुछ करी ऐसी निगाह
बेसबब ख्वाहिशों का चिराग नज़र से बुझा दिया

इससे पहले कि मैं करता अपनी पेश मुश्किलें
उसने बिना पूछे हुए मेरा काम बना दिया

एक होशियार को मुश्किल से मिलती है दीवानगी
होशियार तो मैं बहुत था अब दीवाना बना दिया

रो रो के फिर मैं जब उसके कदमों में जा पड़ा
मेरी सब नादानियों को उसने दिल से भुला दिया

फिर आखिर में तो सारा मसला कुछ थोड़े वक्त में
ख़त्म उसने किया 'बेनिशाँ' और परदा गिरा दिया

रूपोश - छुपा हुआ

41.खूबसूरत इस सफर में

खूबसूरत इस सफर में जमील हमसफ़र लिए हुए
फरिश्तों को भी मिले नहीं ऐसी नज़र लिए हुए

इससे हसीनतर दौर ज़िन्दगी का न हुआ
दीवानगी की खोज में चश्मेतर लिए हुए

खुमार ऐसा कमाल था जो चढ़ता ही गया
दिल से मेरे कभी ना उतरे वो असर लिए हुए

भटकता रहा रात दिन ज़िन्दगी मुस्तआर में
उसके राहे रास्त की अब रहगुज़र लिए हुए

यकायक सामने आकर मेरे हो गए आशकार
दिल में दबाये उनसे वस्ल की खबर लिए हुए

ज़िन्दगी के अलाव में कुछ कमी रह गई
कच्चा हूँ कमज़ोर हूँ और कुछ कसर लिए हुए

मेहरबानियाँ उसकी मैं कभी सकता नहीं चुका
नाम बस उसका 'बेनिशाँ' शामो सहर लिए हुए

आशकार - प्रकट

42.सुकूते मार्ग में लरज़ती

सुकूते मार्ग में लरज़ती चली जाती है परवाज़ यूँ
सोचा नहीं था ऐसे खुलेगा दिल का मेरा राज़ यूँ

सौ पर्दों में छुपा रखी थी मैंने अपने दिल की बात
जाने कहाँ जाकर मिलेगी मुझे मेरी मेराज़ यूँ

सब कुछ उलट पलट गया उनकी बज़्म में एक दिन
अंजाम पर पहुंची कहानी फिर किया आगाज़ यूँ

एक मस्ती सी है जो कभी पीछा है नहीं छोड़ती
जब से दिल में हैं बसे मासूम वो अंदाज़ यूँ

पहले तो दिखाई आशनाई फिर क्यों मुझको भूल गए
अब होने लगे हैं मुझसे वो फिर से बेनियाज़ यूँ

चाहा था सो मिल गया मंजिले मक़सूद पर पहुँच
फ़िक्र नहीं अब हो ना हो उम्र मेरी दराज़ यूँ

कीमत नहीं है अब मेरी कुछ कौड़ियों से बेश्तर
क्यों कर उन्होंने बनाया 'बेनिशाँ' मुझे सरफ़राज़ यूँ

सुकूते मर्ग - मृत्यु की शांति, आशनाई - प्रेम, मंजिले मक़सूद - गंतव्य प्राप्यता, सरफ़राज़ - विशिष्ट

43.मेरी सलाहियत को न देख

मेरी सलाहियत को न देख मेरा इंतजा़र देख
दर पे तेरे कबसे पड़ा है ये गुनाहगार देख

ये ठीक है चोटें बहुत खाईं हैं मैने रात दिन
पर खुद के होशो हवास पे मेरा इख्तियार देख

तेरे आस्ताने के सिवा कोई ठिकाना है नहीं
बेअक्ल हूँ नादान हूँ पर हूँ बेकरार देख

ये सच है नाकाबिल हूँ मैं हूं नहीं किसी काम का
फिर भी मैं तेरा हूँ वही राज़दार देख

माना कि तेरी बज्म में मैं हूँ एक गुनाहगार
मेरे अजा़बों को न देख मुझे शर्मसार देख

लड़ाई जब भी नफ्स से हो हारा हूँ मैं मुसलसल
पर तेरे हर इशारे पर लड़ने को हूँ तैयार देख

नज्जारे जो दिखाए तूने अपनी अज्मतों के साथ
हैरां हूँ खुद को 'बेनिशाँ' जल्वों में गिरफ्तार देख

सलाहियत - योग्यता, मुसलसल - लगातार, अज्मतों - कृपा

44.वो चले आए महफ़िल में मेरी

वो चले आए महफ़िल में मेरी अंजुमन रौशन हो गई
आसमान ने तोड़ दिए सितारे जमीन शबनम हो गई

सुना था मरकज़ में पहुँच सब कुछ थम सा जाता है
वक़्त तो था रुका हुआ और घड़ियां मौजज़न हो गईं

दरिया फैजान का फैला यकायक थी गजब की रौशनी
नज्जारे की दीद फिर चिलमन चिलमन हो गई

मुश्किल है खुशनुमा बने रहना इस तरह के दौर में
जाने क्या था मैंने पूछा वो तो बरहम हो गईं

फिर जो उसने बात की दिल की परतें खोल कर
कहानी उसकी सुनते सुनते आँखें पुरनम हो गईं

जब ठिकाना मिला नहीं भटका हर शहर में तेरे
बरसों की रियाज़तें सारी जानिबे हरम हो गईं

किस्सागो तुम हो नहीं पर तुमने जादू क्या किया
तुम्हारी ये कहानियां 'बेनिशाँ' सारी पैहम हो गईं

मौजज़न - तरंगित, मरकज़ - केंद्र, पुरनम - सजल, पैहम - निरंतर

45.मैं नहीं तू नहीं

मैं नहीं तू नहीं कोई अनफास भी नहीं
फिर बाकी बचा है कौन ये हिसाब भी नहीं

एक चुप फैली है यहाँ नहीं कोई आवाज़ है
आंधियों की तो बात छोड़ कोई सैलाब भी नहीं

सारे फसाने खत्म हुए हर कोई खामोश है
कहीं दूर दूर तक दिखता ख्वाब भी नहीं

हर किसी अंजान को नवाज़ते तो हो बज्म में
इस साइल को एक कतरा नजरे शराब भी नहीं

बहुत सँगदिल हो गये तुम कैसे तुम्हें मैं जीत लूँ
सारी कोशिशें के बाद क्यों मैं कामयाब भी नहीं

कजा़ कुछ ऐसी गिरी सब खामोश हो गया
दूर दूर तक कहीं कोई इंकलाब भी नहीं

फैसले पर पहुँचा था मैं ये नतीजा जानकर
उसके करम से 'बेनिशाँ' जीस्त अजाब भी नहीं

अनफास - सांस

46.इधर ये बद आमाल मेरे

इधर ये बद आमाल मेरे उधर ये किब्रियाई तेरी
इधर ये मेरी काविशें और उधर ये रहनुमाई तेरी

कुछ यहाँ पर न देख पाया तुमको देख लेने के बाद
किसी काम की नहीं 'बेनिशाँ' रही बीनाई तेरी

खुद अपनी मौसिकी में दिल को भरमाता रहा
मुझे तो दूर दूर पड़ी आवाज नहीं सुनाई तेरी

बहुत देर तक किया गौर इक मुअम्मा हो गया
आखिर अक्ल में जाकर बैठी बात जो समझाई तेरी

जाने कितने दिनों के बाद देखा मेरा ये हाल तो
आते ही मेरी बज्म में क्यों छूट गई रुलाई तेरी

सारे जहाँ के दर्द को जब मैंने अपना बना लिया
छुप न सकी अफशां हुई हर जगह रहनुमाई तेरी

उसकी अक्ल की रौशनी से मुझे भी कुछ मिला सबब
आखिर समझ में आई 'बेनिशाँ' बात जो समझाई तेरी

किब्रियाई - बढ़ाई, काविशें - कोशिशें, बीनाई - दृष्टि, मौसिकी - सँगीत, पारसाई - पवित्रता

47.उसके हसीन जमाल में

उसके हसीन जमाल में पिघलता चला गया
तकमील के मरहलों से निकलता चला गया

वल्लाह क्या ये तेरी बेनज़ीरी है कमाल
रहनुमाई उसकी लेकर संभलता चला गया

पहले गिरा फिर उठा फिर उठ के चल पड़ा
फना हुआ उसकी ज़ात में ढलता चला गया

किसी तिफ्ल के चाँद को छूने की आरज़ू
दिल था नादां था बड़ा मचलता चला गया

वो अय्यार था कि या फिर कोई सितमगर
जाने कितने रूप वो बदलता चला गया

उसके हसीन जमील की दिलावेज़ मुहब्बत
प्यार की थपकियों में बहलता चला गया

देखा न कभी किसी तरफ इस खूबसूरत सराब में
मुकर्रर रहगुज़र पर 'बेनिशाँ' चलता चला गया

बेनज़ीरी - खूबसूरती, रहनुमाई - मार्ग निर्देशन, तिफ्ल - बालक

48.नाबीना जब भटकता रहा

नाबीना जब भटकता रहा उनकी याद में
उंगली उन्होंने पकड़ ली मेरी इमदाद में

एक जादूई नज़र से फिर यों दीवाना कर दिया
आगे आगे रहबर चला मैं उसके बाद में

एक ही मौका मिला था जाँनिसारी का मुझे
जान फिर लुटा दी मैंने उसकी मुराद में

उसकी एक तबस्सुम पर सब कुछ तो दे दिया
खजाने खाली कर दिये तब उसकी दाद में

वादा किया था आने का इसलिए हरेक वक्त
आँखें डगर पर लगी रहीं बस एतकाद में

थोड़ा हो कम हो फिर कहीं किधर तो हो
मेरा भी हो जिक्र कभी तो इस रूदाद में

सारी नियामतें उस तरफ और तू इस तरफ
'बेनिशाँ' तुझे मांग लिया फिर हमने मुराद में

नाबीना - अंधा, इमदाद - मदद, जाँनिसारी - जीवन उत्सर्ग, रूदाद - वृतांत

49.कैफ़ियते मुहब्बत कोई

कैफ़ियते मुहब्बत कोई जाने जीस्त से मेरी
सबक मिलेगा रिन्दों को दास्तां से मेरी

देखने का गर शौक हो कर लो तुम मेरी दीद
कज़ा है बस बरस रही जिस्मों जाँ से मेरी

मेरी गली में आज ये कैसा शोर है हो रहा
मुलाकातें सब कर रहे चाक गिरेबां से मेरी

एक कामिल बुजुर्ग का तो उस वक्त ये था बयान
आलमे अरवाह में लो दाखिला पेहचां से मेरी

नाजिल होती है ग़ज़ल तो गैब से कभी कभी
कलमे निकलते रहते हैं अक्सर जुबाँ से मेरी

जब राज फाश हो गया तो मैंने ये कहा
रौशनी सुकूनो राहत है इक मुस्कां से मेरी

मेरे आहो नालों का भी कभी वक्त आएगा
बारिशें तब 'बेनिशाँ' फिर होंगी फुगाँ से मेरी

आलमे अरवाह - सूक्ष्म लोक, आहो नालों - रुदन, फुगाँ - रोना

50.महशर खिराम और महवश है

महशर खिराम और महवश है ये मेरा बेताबे दिल
कहाँ से लाए हो 'बेनिशाँ' तुम ये मेहताबे दिल

अक्सर तो मन में मेरे आता रहता है बार बार
दिखला दूँ नज्जारे उन्हें करूँ बेनक़ाबे दिल

कुछ और वक़्त करना होगा अभी तुमको इंतजार
सारी धुन्ध हट जाएगी निकलेगा आफताबे दिल

शम्स तुलू हो जाएगा तब उनके निजाम में
रोशनी होगी जहां में होगा इंकलाबे दिल

अभी घटा उमड़ने में कुछ लगेगा वक्त थोड़ा
तोड़ दूँ उस तिलिस्म को ऐ मेरे सैलाबे दिल

मेरे तो बस की बात नहीं पर ये कोशिश है ज़रूर
सबकी मदद को हाजिर है मेरा लाजवाबे दिल

पूरे शहर में शोर है हर कोई है पूछता
किसकी दुआओं से 'बेनिशाँ' हुआ तुम्हारा कामयाबे दिल

महशर खिराम - प्रलयंकारी चाल, महवश - चाँद जैसा सुंदर,
शम्स तुलू - सूर्योदय

51.जिंदगी जीने का मेरा

जिंदगी जीने का मेरा नया अंदाज हो गया
कहकशाँ से गुजर गया और नई परवाज़ हो गया

तूने नजर ऐसी डाली फिर कुछ जादू सा हुआ
सब अरमान मिट गए और सरफराज हो गया

इक नई रौशनी से मैं फिर मुअत्तर जो हुआ
ख्वाहिशें पूरी करके दिल बेनियाज़ हो गया

चल पड़ा मैं अकेला फिर मिला सबका साथ
गैब से तब आती हुई कोई आवाज़ हो गया

ये भी एक मुअम्मा है कैसे मैं तो करूँ बयान
अंजाम होने के बाद फिर आगाज़ हो गया

ये जनाब दिल है मेरा कोई तमाशा तो नहीं
क्या दिलकश धुनें छेड़ने का ये कोई साज हो गया

बहुत कुछ तुमने किया अब तो ये करम करो
'बेनिशाँ' को छोड़ दो अब ये उम्रदराज हो गया

मुअत्तर - भीगा हुआ, मुअम्मा - पहेली

52.मेरे फना हो जाने की

मेरे फना हो जाने की न कोई खबर बची
न कोई ख्वाहिश बची न कश्मकशे दहर बची

मलाल भले सौ थे पर दिल में तो था सुकून
न कोई बचा था काम न कोई कसर बची

कभी कभी इस सफर में तब ये ऐसा क्यों हुआ
उनके करम से जीस्त मेरी क्यों बेखबर बची

सारे अजाब मिट गये फिर तुम्हारे ख्याल से
साफगोई मेरे दिल की मेरी हमसफ़र बची

और कोई तो था नहीं जो बनेगा रहनुमा
मानिंद एक साइल के मेरी उन पर नजर बची

कायम रखना मुझको उनका राहे रास्त पर
मुश्किल थीं ये कोशिशें फिर भी मगर बची

बाद मुद्दत के बहुत ये कैफ़ियत हुई कमाल
उनके आस्ताने पे 'बेनिशाँ' मेरी चश्मेतर बची

कश्मकशे - जीवन संघर्ष, साइल - भिखारी

53.खताएं मेरी माफ कर

खताएं मेरी माफ कर के मुझे अपना बना लिया
काबिल न था मैं फिर भी कदमों में बिठा लिया

मुझे मालूम है कि उन्हें सब कुछ तो था पता
मुझ गलीज को भी अपने सीने से लगा लिया

मेरी क्या औकात थी जाने किस की दुआ थी साथ
ना मालूम कहाँ कहाँ के लोगों ने सर पे उठा लिया

रास्ता मुझे मिल गया और खतम हुई तलाश
अपनी उम्मत में फिर मुझे उसने मिला लिया

बहुत दिनों से इस सहरा में बारिश नहीं हुई
उसके इंतजार में मैंने पलकों को भिगा लिया

जब भी उस से रूठ कर मैं चला गया था दूर
नाराज न रह सका मैं आखिर उसने मना लिया

उनका बड़ा करम है और ये किस्मत है मेरी
अपने मुरीदों में 'बेनिशाँ' का नाम लिखा लिया

गलीज - गंदा

54.चल पड़ा हूँ मजबूत कदम

चल पड़ा हूँ मजबूत कदम अब तुम्हारी राह में
मुझे भी शामिल कर लो अब अपनी पनाह में

सबको कर लिया कुबूल मैं अकेला ही रहा
परवाह नहीं है मौत की अब तेरी कत्लगाह में

ये जरूर है कि साजे दिल टूटा है अभी
पर देख लो कहीं आवाज है नहीं मेरी आह में

हद से बाहर निकल गया कैसे करूँ बयान
दर्द गायब हो गया है अब मेरी कराह में

तेरे करम से मुझको अब ये रास्ता मिल गया
अपने को मिटा डालूँगा मैं अब तेरी चाह में

मैं अजीब इंसान हूँ और अजीब हैं मेरे आमाल
परवाह मेरी क्यों करते हो तुम खामख्वाह में

देखो अब कैफ़ियते नूर का हर वक़्त जमाल है
मेरी तो बन आई 'बेनिशाँ' अब तेरी निगाह में

आमाल - कर्म

55.तबाह कर के रख दिया

तबाह कर के रख दिया मेरे दिले आबाद को
आएगा कौन इस जहां में मेरी इमदाद को

मैं तो हूँ नाकिस नाकारा और हूँ जमीं पर बोझ
शराबे गैब कैसे मिलेगी मुझ बर्बाद को

उलटा पलटा देखा भाला फिर नजरें फेर लीं
आंसू भरी मेरी आँखें तड़पती हैं याद को

चुप खड़े सब देखते रहे मुझ बेसूद का ये हाल
किस जुबाँ से मैं सुनाऊँ तुम्हें इस रूदाद को

ये तेरी गजलें 'बेनिशाँ' कड़ी दोपहरी सी तो हैं
इस तपते हुए सहरा में कौन मिलेगा दाद को

जान लबों तक आ गई कब टूट जाये डोर
करा दो थोड़ा यकीन अब इस दिले एतकाद को

सब हैं अपनी मस्ती में गुम नशे में झूमते
किसको फुरसत 'बेनिशाँ' से पूछें इर्शाद को

बेसूद - व्यर्थ, रूदाद - कथा, एतकाद - श्रद्धा, इर्शाद - आदेश

56.बार बार उन्हें देखना

बार बार उन्हें देखना इक नया शग़ल हुआ
बाद वक्त में कहीं जाकर मैं उसकी नकल हुआ

कैसे मजे की बात थी जादू हुआ कायम
दिल का यूं आ जाना कैसे उस पल हुआ

हर बार नया रूप दिखा के अय्यार छिप गया
उम्मीद नहीं थी मुझको फिर भी मसला हल हुआ

अंजाम तो मेरा पहले से था बिल्कुल तयशुदा
अजाब सारे मिट गये बड़ा गजब अमल हुआ

आफताब जैसे हुआ तुलू अंधेरा मिट गया
कहकशाँ पर उसका आ जाना लगा मेरा कतल हुआ

मेरे तो बस की बात नहीं कैसे मैं रोक लूँ
सर्द मेरी इन आहों से तेरी जीस्त में खलल हुआ

ये मेरे दर्द आमेश सुखन सब हैं तेरे लिए
'बेनिशाँ' सुबह शाम रोना दर्द भरी ग़ज़ल हुआ

आफताब - सूर्य, दर्द आमेश - दर्द भरे, सुखन - गीत

57.हर लमहा तुम्हारी तड़प में

हर लमहा तुम्हारी तड़प में दिल है बेकरार भी
उसकी इक नज़र के प्यासे हैं मुझ गुनहगार भी

उसकी इक निगाह में मेरे होश उड़ गये
हवास तो गायब हुए फना दिलेजा़र भी

तपते हुए इस सहरा में है इक बूँद की है तलाश
खबर दे कौन उनको मेरी न बचा इख्तियार भी

तुम्हें खबर हो न हो पर हर कोई ये कह रहा
कुछ बेबस लोग करते हैं तुम्हारा इंतजार भी

पड़े जब कभी जरूरत हमारी तरफ भी देखना
ढूँढने से तुमको मिलेंगे नहीं मुझ गमगुसार भी

ये ठीक है कि तुम्हारे हैं बेशुमार हमसफ़र
हमें न भूल जाना हम हैं राज़दार भी

दिल से मेरे खेला खेल चाहा जब तोड़ दिया
कहीं ऐसा भी होता है 'बेनिशाँ' हर बार भी

हवास - होश

58.तुम्हारे दरस का रोग लिए

तुम्हारे दरस का रोग लिए ये पुराना मरीज है
कभी तो कह दो तू मेरा बहुत अजीज है

दर पर तुम्हारे पड़ा हुआ कभी नजर तो करो
तुम्हारे जलवों को देखना एक बड़ी चीज है

बहुत वक्त से खड़ा हूँ करता हूँ इंतजार
मैं दीदार के काबिल नहीं न मुझको तमीज है

कभी निगाहें अपनी उठाओ देखो मेरी तरफ
सर झुकाए कदमों में बैठी तुम्हारी कनीज़ है

नम फिर हो गई आँखें उसकी सुनकर मेरी सदा
उसके दिल में मेरे लिए मुहब्बत का बीज है

तुम ने कोई कमी न की बस मैं ही भटक रहा
मेरी तरफ तुम देख लो ये बड़ा गलीज है

आसरा है अब सिर्फ तेरा मैं हूँ तेरा मुरीद
देख लो तुम 'बेनिशाँ' को बड़ा नाचीज़ है

कनीज़ - दासी

59.अंजुमन के शोर में

अंजुमन के शोर में खिलवतगरी मुहाल है
जलवे तेरे नूर तेरा कमाल ही कमाल है

अजहद कोशिश है मेरी दिल लगता नहीं कभी
दिल एकसुई समेट लेना बड़ा बवाल है

किस्मत अच्छी है मेरी जो तेरी नजर पड़ी
अब निगाहों में आया दिल मेरा बड़ा निहाल है

चलो अच्छा ये हुआ सभी को खबर हुई
सबसे कहूँगा प्यार तेरा मुकम्मल मिसाल है

उसकी गली के मोड़ पर कदम थम गये
पा जाना तेरे दीदार का बड़ा एमाल है

मेरा दिल जाने गया कहाँ मिलता नहीं निशान
दिल को मेरे समेट रहा तबस्सुम का जाल है

जान फिदा है तुम पे हमारी अब ये मान लो
तुम्हारे पीछे जो पड़ा 'बेनिशाँ' जी का जंजाल है

एमाल - कर्म

60.राहगुज़र तसव्वुफ का जनाब

राहगुज़र तसव्वुफ का जनाब रास्ता ए आम नहीं
उनके दिल तक मेरे क्यों पहुँचते हैं सलाम नहीं

कूचा ए खास है ये लोगों कोई कमतर नहीं यहाँ
सिर सौंपने का खेल है कमजर्फों का काम नहीं

मत देखो हिकारत से मुझे तेरे दर पर पड़ा हुआ
अब तेरा दर है मेरा हासिल मैं परेशान नहीं

खुल्लमखुल्ला बँट रही है जो चाहे सो पिये
आँखों की मय कूचा ए यार पर होती हराम नहीं

कदमों में तेरे आ पड़ा हूँ दुनिया को करके तर्क
बंदा हूँ मैं तेरा मालिक नफ्सानी गुलाम नहीं

जाने मुझसे किस बात पर मेरे सनम रूठ गये
क्यों नहीं आते अब मुझे प्यार भरे पैगाम नहीं

ये ठीक है ताजीम मिली पर असल बात है और
इतना ऊँचा तो 'बेनिशाँ' भला तेरा मुकाम नहीं

तसव्वुफ - ईश्वरी ज्ञान, तर्क - त्याग

61.कुर्बते पैहम में हूँ फना

कुर्बते पैहम में हूँ फना बका हूँ राहत फज़ा में मैं
क्या हूँ और मैं कौन हूँ देखो रोजे जज़ा में मैं

ये कुछ तेरी काविशें और इधर मेरी खुशनूदियां
खुश हूँ और मस्त हूँ 'बेनिशाँ' तेरी कज़ा में मैं

बहुत दिनों से था रोजा अब कुछ पुरशिकम है खाया
भर गया सैराब हो गया लुत्फन ये गिज़ा में मैं

ये तुम्हारी नज़र जो पड़ी सैलाब उमड़ गया
मुझे सब कुछ मिल गया पड़ा हूँ इल्तिज़ा में मैं

मैं तो अब मैं हूँ नहीं तुम ही तुम हो चार सू
शाद हो गया खुदी के लुट जाने की सजा में मैं

वक्त भी ऐसा आता है सब कुछ जाता है मिट
मुसल्सल फना होता गया इस हसीन फिज़ा में मैं

जब सब कुछ मैंने सौंप दिया कदमों में जानां
दुनिया में खुश हूँ 'बेनिशाँ' अब तेरी रजा में मैं

कुर्बते पैहम - समीपता की निरंतरता, रोजे जज़ा - कयामत का दिन, राहत फजा़ - आनंददायक

62.पंछी हूँ लाहूती का मैं

पंछी हूँ लाहूती का मैं मेरी ऊंची परवाज है
आशियाँ ज़ाते मुतलक में है मेरा अंदाज़ है

तोहफ़े मिले हैं कमाल के नई शुरू हुई मौसिकी
सबके दिल के तार छिड़ गए मेरा ये साज़ है

देखे जाओ तुम 'बेनिशाँ' अभी शुरू हुआ है खेल
इस रास्ते में मुश्किलातों से ही होता आगाज़ है

छुप जाओ दामन में मेरे बस ठिकाना है यही
बहुत दूर से चली आ रही ये किसकी आवाज है

कारवाँ लुट जाने पर भी मुझे नहीं हुई खबर
लोग कहने लगे हैं 'बेनिशाँ' तू बहुत बेनियाज़ है

खुशबू भरी हवा चल रही हर तरफ खिले हैं फूल
खिलता हुआ पूरा चाँद दिलकश आज है

ले चलो तुम मुझे साकिया हफ्त आसमानों के परे
हम भी देखें 'बेनिशाँ' क्या यही होता मेराज है

लाहूती - शून्यता, जाते मुतलक - अखंड ईश्वर, मेराज - ईश्वरीय मिलन

63.मेरा ही तो कुसूर था

मेरा ही तो कुसूर था जो राज़ अफशां कर दिया
जान देना है उनके दर पे फिदा रूह जाँ कर दिया

कैसे हसीं और कमाल हो दुनिया में इक यकता हो तुम
प्यार भरी नज़रों को मैंने उनपर कुर्बां कर दिया

जान मेरा निछावर करना ये तो कभी होना ही था
चलो वाजिब हुआ 'बेनिशाँ' फैसलाए ईमां कर दिया

बहुत दिनों से मैं चुप था दिल में अपना दर्द लिए
जान फना करने के पहले उसको राजदां कर दिया

देखो इस दुनिया में तो सभी तरह के लोग यहाँ
उनकी तो थी हालत गैर उन्हें क्यों परेशां कर दिया

जान हथेली पर लेकर मैं तो दर पर तेरे पड़ा हुआ
जान लेकर तुमने मुझपर अच्छा अहसां कर दिया

बच कर मुझसे रहते थे खोजो तो कोई पता नहीं
वक़्त ने देखो मुझे 'बेनिशाँ' उसका मेहमां कर दिया

मुक़ामी - स्थित, अजमत - कृपा, तस्ख़ीर - सम्मोहन, कुर्बत - सामीप्य, तासीर - प्रभाव, मुअम्मा - पहेली, तामील - अनुसरण, तामीर - निर्माण, महब - लीन, खलवत - एकांत, “उज़लते अफ़्कार फ़रोज़ा” - एकांत चिंतन में रौशन, जुस्तजू - इच्छा, राज़दां - रहस्य का भागीदार, तसव्वुफ़ - दर्शन, तदबीर - तरकीब

64.बज्मे निगाराँ छोड़ दी

बज्मे निगाराँ छोड़ दी आस्ताने यार दिख गया
उन्हें इस बाजार में मुझसा ग़मगुसार दिख गया

जीते जी तो पर्दा किया पर राज खुला फना के बाद
जो हुआ सो हो गया मुझे उनका दीदार दिख गया

जमी हुई थी महफ़िल उनकी मैं तो तश्ना लब ही रहा
लगता है तुम्हें मुझसे ज्यादा कोई बेकरार दिख गया

हर जगह तो मैंने ढूँढा जाने कहाँ पर छिपे थे तुम
आखिर मुझे दिल के अंदर राज़दार दिख गया

दुनिया है ये कमाल की गम किसी का बांटे कौन
इस मेले में कहीं मुझे एक खरीदार दिख गया

जब बहारें न आएँ तो मुझसा फूल खिले कहाँ
इन सर्द हवाओं में भी मुझसा गुलज़ार दिख गया

दिल में अपना दर्द छुपा कर जाने कहाँ पर रहते हो
खोजने पर मुझे 'बेनिशाँ' वो अश्कबार दिख गया

बज्मे निगारां - सुंदरियों की महफिल, अश्कबार - आंसू भरा

65.जादूई आँखों ने तेरी

जादूई आँखों ने तेरी कुछ ऐसा काम कर दिया
गुलाम मुझे बना लिया फिर नीलाम कर दिया

मुझमें तो कोई बात नहीं कुछ नहीं था मेरा मोल
देखते ही देखते फिर मुझे और हैरान कर दिया

नफ्सानी ख्वाहिशों का तो खेल होता बड़ा निराला है
इन झूठे सराबों के पीछे क्यों मेरा अंजाम कर दिया

तेरी गली में मैं इक साइल कुछ भी मेरे पास नहीं
ले दे के इक दिल ही बचा था वो भी तेरे नाम कर दिया

छुप छुप कर मैं फिरता था लेकिन तुमने ढूँढ लिया
कदमों में उसके जाकर फिर खुद को तमाम कर दिया

खत मिला न कोई इशारा जाने कितना वक्त हुआ
आँखों ही आँखों से उसने एक पैगाम कर दिया

ये दुनिया तो पागल है इसको कुछ भी पता नहीं
सारी भीड़ ने फिर आखिर 'बेनिशाँ' को सलाम कर दिया

नफ्सानी - मानसिक

66.एक और शिकार हो गया

एक और शिकार हो गया उनकी निगाहे नाज़ का
अंजाम में ही तो छुपा था खेल बेनियाज़ का

ज्यादा मैं क्या करूँ बयाँ एक मुख्तसर सी है बात
उरूज करा के चखा दिया स्वाद मुझे मेराज का

देखते ही तो सब रह गये यकायक ये क्या हुआ
किस तरह मैं शुक्र करूँ अदा उस आगाज़ का

मुझे तो कुछ पता नहीं शायद उसे खबर तो हो
कैसे हवाओं में फैल गया किस्सा जो था राज़ का

कदमों को रोक सकता नहीं मैं उसकी पुकार पर
टाल नहीं सकता था बुलावा मैं उस पुर आवाज का

किस तरह कुर्बान कर दिया मुझको न पूछिये
कैसे ज़िक्र करूँ मैं उस कातिलाना अंदाज का

बहुत दूर घर है उसका मुझको उड़ना सिखा दिया
शौकीन हो चुका है 'बेनिशाँ' अब परवाज का

मुख्तसर - छोटी सी

67.निकलेगा इक जुलूस

निकलेगा इक जुलूस अब कूचा ए यार में
दीवानों का होगा सर कलम उस बाजार में

चाक गिरेबां पड़े हुए हैं शहीदों के खेल में
उनको खुदा है मिल गया दीदारे यार में

दिल और जाँ दौनों उनके अदब में हैं कुर्बान
बाकी कुछ नहीं रहा अब मेरे इख्तियार में

पूरा शहर तो सर खम किए दर पर तेरे पड़ा
फिर बिक रहा है कौन जाने आस्ताने यार में

सब काविशें खत्म हो गईं दिल पत्थर हो गए
दर्द तुम्हें क्यों होता नहीं ऐसे दिले ज़ार में

भीड़ है उनके कूचे में लम्बी सफ लगी हुई
हमारा क्या है कहीं बैठ जाएंगे इंतजार में

अच्छा किया हमने सौदा करके जाँ निसार
जा़ते मुतलक का पता मिला 'बेनिशाँ' करार में

चाक गिरेबां - अहम से शून्य, काविशें - कोशिशें, सफ - पंक्तियां

68.वादा वो करते गये

वादा वो करते गये फिर हमसे बड़े अंदाज़ से
छेड़ दिया तराना नया अपने दिल के साज़ से

कैसी गजब थी उसकी तान कोई भी न रुक सका
घर छोड़ सब निकल पड़े बस एक आवाज़ से

मुस्करा के तेग उठा सिरों को किया हलाल
हम हँस के सिर कटवाते रहे बड़े बेनियाज़ से

चल पड़ा कारवाँ मेरा आलमे अरवाह के परे
रोक सकता नहीं अब मुझको कोई मेराज से

आग शहर में फैल गई सबको खबर हुई
दो चार सब हो गए उसके राज़ से

बड़ी मुख्तसर सी बात है अंजाम नहीं पता
जाने कितने फना हुए शुरू में आगाज़ से

ले चलो मुझको ए दोस्त हफ्त आस्मानों के परे
गुरेज नहीं है अब 'बेनिशाँ' कोई ऊंची परवाज़ से

मेराज - ईश्वरीय मिलन, हफ्त आस्मानों - सात आसमानों

69.तेरी अताओं पे निसार

तेरी अताओं पे निसार तेरी रहमत को सलाम
झुकाऊं सिर कदमों में तेरे तेरी अज़मत को सलाम

मुझ जैसे नाकाबिल को भी तेरी ऐसी मेहर मिली
जो तुमने मुझ पर कर डाली तेरी मेहनत को सलाम

ये तो इक दिन होना था खुशबू को कोई सकता रोक
चार सू फैल रही थी तेरी शोहरत को सलाम

बहुत छोटा और दाना हूँ उसकी गली में मैं तो आज
है मामूली फिर भी लेकिन मेरी खिदमत को सलाम

मालूम है मुख्तार हो तुम तो अपने आप में पूरे हो
कभी तो तुम्हें पड़ेगी मेरी जरूरत को सलाम

बाट जोहता हूँ मैं तो तुम्हारी कहीं तुम्हारा मिले पता
दो घड़ी को मिल जाए वल्लाह उस फुर्सत को सलाम

ये ठीक है बहुत हैं मुझसे तेरे दर पर पड़े हुए
'बेनिशाँ' कर भी दो तुम मेरी शहादत को सलाम

दाना - तुच्छ

70.सिर कटा मकतल में मेरा

सिर कटा मकतल में मेरा नई जिंदगानी हो गई
धीरे धीरे रूह मेरी उसकी दीवानी हो गई

मुझमें कोई बात न थी जो इक उसकी नजर पड़ी
मिल गया मुझे मुकाम बड़ी मेहरबानी हो गई

बहुत दिनों से संभाल के रखा दिल के प्याले को
ये दिल टूटा हुआ जो मेरा उनकी निशानी हो गई

कहाँ तो तुम हंसी खुशी की बातें करते रहते थे
अचानक तेरा ये नज़र फेरना एक नई कहानी हो गई

मुस्तकबिल में बहुत से होंगे तेरी कहानी के गाहक
हिफ्ज कर ली दास्ताँ मैंने मेरी जुबानी हो गई

बहुत भीड़ थी बहुत था पीछे फिर भी उसकी नजर पड़ी
इस साइल पर उनकी आखिर निगेहबानी हो गई

सारे जहाँ को खोज है तेरी सारे जहाँ को तेरी ढूँढ
रहमतें उसकी तो 'बेनिशाँ' अब आसमानी हो गई

हिफ्ज - स्मरण कर लेना

71.खुमो सागर खुल गए हम पर

खुमो सागर खुल गए हम पर कायनात में
'बेनिशाँ' फना हो गया फिर उनकी जा़त में

उनका करम उनका रहम आला बड़ा अज़ीम
शुबहे सारे मिट गए उनकी इनायात में

जल्वा तेरा देख कर फिर हैरत में सब पड़े
क्या कशिश थी क्या कमाल था करामात में

बहुत दूर मंज़िल है तेरी तू संभल के चलना
कहीं फँस न जाना होके मुब्तिला चंद ज़रूरात में

बड़ा दिलकश फंदा है ये दुनिया है इसका नाम
होते हैं वसवसे बड़े बड़े मुश्किलात में

जाने हैं कितने मुरीद उनके पर मुझपर नज़र पड़ी
प्यार इस साइल पर लुटा दिया ऐसी रिवायात में

मिस्मार कर दो तबाह कर दो न बचे कोई निशाँ
कुर्बान कर दो 'बेनिशाँ' को खैरात में

मिस्मार - तोड़फोड़ देना

72.तकवा का सिर पर ताज लिए

तकवा का सिर पर ताज लिए चश्मेतर लिए
तू नहीं लेकिन तेरी इक तस्वीर मगर लिए

कितना हसीन सफर है ये जब वो साथ हों
चल पड़ा हूँ शाह राह उनको हमसफर लिए

तेरी दूरअंदेशियाँ और वाह क्या तेरे अंदाज
दिल में बनाए हुए एक खूबसूरत शहर लिए

उसका जमाल छुप न सका क्या कमाल था
उस हसीन रू का दिल पर असर लिए

कभी अफ्शां की थी उसने मेरे अंजाम की बाबत
सीने में छुपाए हुए बस इक वो खबर लिए

वक़्त लगा फिर भी लेकिन ये अच्छा ही हुआ
पहुँच ही गए हम फिर उनके घर की डगर लिए

कैसे मैं उनको भूलूँ मैं तो हूँ बस गिरफ्तार
'बेनिशाँ' दिल में याद बसाए शामोसहर लिए

तकवा - सँयम, चश्मेतर - भीगी पलकें

73.या इलाही कर ले शुमार

या इलाही कर ले शुमार अपने राज़दारों में मुझे
अब राज़ गैबी खोल दे बस कुछ इशारों में मुझे

कुछ भी मेरे पास नहीं खाली पड़ा है मेरा जाम
मेहर हो और करम हो ले अपने प्यारों में मुझे

ये ठीक है मुझसे बहुतेरे तेरे दर पर पड़े हुए
शामिल कर लो मेहरबान अब अपने सहारों में मुझे

जाने कहाँ ले आए मुझको कौन सा दरिया है ये
ले चलो मुझको बहा कर अब अपने किनारों में मुझे

जाँ है उनकी दिल भी उनका यह सब उनका जादू है
शुमार कर रहे लो इस साइल को गम के मारों में मुझे

जहां कहीं भी मैं छुप जाऊँ नजर तुम्हारी पुर कमाल
ढूँढ लो इस भीड़ में फिर भी तुम बेशुमारों में मुझे

मैं भी कितना नाकिस हूँ जिसको अपना तक पता न हो
नामजद किया तुमने 'बेनिशाँ' अब बेकरारों में मुझे

नाकिस - व्यर्थ, नामजद - नामांकित

74.ले आया है शौके दीद

ले आया है शौके दीद अब मुझे इस बाज़ार को
थोड़ी सी हो तवज्जो जनाब मेरे इंतज़ार को

मेरे जैसे कितने बहुतेरे तेरे दर पर पड़े हुए
शामिल कर लो जीस्त में अपनी मुझ राजदार को

क्या दिलकश आवाज थी तेरी खींच लाई है मुझे
अब छोड़ दो मस्ती में मुझ इस दिलेज़ार को

तेरी मेहरबानियाँ और वाह क्या हैं करम तेरे
कभी करार तो मिल जाए मुझसे इस बेकरार को

मैं पीछे छूट गया जन्नत को सारे निकल गए
फिरदौसी हुवाबों की जरूरत नहीं इस खाकसार को

एक बार नजर तो डालो मुझ जैसे इन्सान पर
मगफिरत भी कभी मिलेगी मुझ गुनहगार को

जाने कौन चौखट पे तुम्हारी कब से था वो पड़ा हुआ
'बेनिशाँ' देख भी लो तुम कभी अपने वफादार को

हुवाब - बुलबुला, खाकसार - तुच्छ, मगफिरत - मोक्ष

75.सातों आसमानों की उड़ान

सातों आसमानों की उड़ान सिर्फ तेरी चाह में
हौसला मेरा है अजीमो बुलंद अब तेरी राह में

मैंने देखा इधर ना उधर बस यूं ही निकल पड़ा
जाने कितने फ़ना हुए दीवाने कत्लगाह में

बस तुम ही नजर के सामने अब यूं रहो कायम
नाशाद क्यों हो जाते हो मुझसे खामख्वाह में

सुनते हैं दिल पिघलता है दीवानों की आह से
कुछ तो असर पैदा कर दो अब मेरी चाह में

सब कुछ बना कर लाया हूँ तेल बाती और दिया
रोशन कर दो मेरा वजूद बस एक निगाह में

मुझ को खबर नहीं जाने कौन सा था जुर्म
काट रहा हूँ कब से मैं कैद अनजाने गुनाह में

सोचता हूँ उनका कभी तो होगा दिल बेचैन
अगर कुछ दर्द होगा 'बेनिशाँ' मेरी कराह में

नाशाद - दुखी

76.लाख करें हम गलतियां

लाख करें हम गलतियाँ फिर भी तू करीम है
तेरी फराख रहम दिली पर हमें यकीन है

बहुत अजीम हो बहुत ऊंचे कभी नीचे भी करो नज़र
तुम्हारे सात आसमानों के नीचे यहाँ मेरी ज़मीन है

मुख्तसर सी बात को तुमने एक फसाना बना दिया
उनके कदमों में जाकर दिल अब मुतमईन है

बहुत कसक थी दिल में मेरे जाने अब क्या होगा
ऐसा कभी ख्याल में न आया तू क्या नुकताचीन है

यह दुनिया तो मेला है और दिल मेरा नादान
दिल मेरा यह तिफ्ली दिल बड़ा तमाशबीन है

जाने कहीं भी तुम भटको पर ज्यादा न फिक्र करो
तवक्कुल करो मालिके जहान पर जो बड़ा मुकीम है

सबसे आगे मैं जा निकला सब पीछे छूट गए
मैंने आखिर दिखा दिया 'बेनिशाँ' बेहतरीन है

मुतमईन - संतुष्ट, तिफ्ली - बच्चा, तवक्कुल - भरोसा

77.रज्मे खैरो शर में बेवजह क्यों

रज्मे खैरो शर में बेवजह क्यों उलझा दिया मुझे
चला था मैं तेरी चाह में और कहां पहुँचा दिया मुझे

मंजिल पर पहुँचा कारवाँ मैं तो पीछे रह गया
दर्दे अलम का किस्सा ए गम क्यों सुना दिया मुझे

बेपरवाह हो और बेदिल हो लेकिन ये ठीक हुआ
कब से मैं तो सोया पड़ा था जगा दिया मुझे

मुझ जैसे नाकिस पर एक करम हुआ वाजिब
हस्ती मेरी मिस्मार कर डाली अपना बना लिया मुझे

बख्शा मुझे इल्म लदूनी अब ये आलम है मेरा
हर सिम्त और हर गोशे में पिन्हा किया मुझे

कभी तो मुझे भी मिल जाए तेरी खिदमत का मौका
बमुश्किल पहुँचा कदमों में तेरे क्यों हटा दिया मुझे

ग़म में उसके सुलगते रहना काम है सवाब का
'बेनिशाँ' भी धीमे जलते रहता क्यों बुझा दिया मुझे

रज्मे खैरो शर - लड़ाई अच्छे बुरे की, नाकिस - किसी काम का नहीं, इल्म लदूनी - पूर्ण ज्ञान

78.निकला हूँ नाम लेकर तुम्हारा

निकला हूँ नाम लेकर तुम्हारा आलमे दहर में मैं
रहमों करम के जबसे था हुआ जेरे असर में मैं

बना के अपना छोड़ दिया तुमने जादू क्या किया
चलता हूँ राहे रास्ते पर शुक्र है हूँ राहे गुजर में मैं

वाह क्या जमाल है उसका चर्चा गली गली
भूल गया हूँ वजूद अपना नहीं हूँ खबर में मैं

ये कैसी गजब गिरफ्त है उसकी जादू बा-कमाल
मुब्तिला हूँ याद में उसकी शामो सहर में मैं

बड़ी अजब ये दुनिया है हर कोई है नफ्स का गुलाम
देखता हूँ आफत जदा ये दुनियाँ इस चश्मे तर में मैं

सारे पीछे छूट गए देखो मैं आगे गया निकल
देख लिया करता हूँ जलवाए हक इक नजर में मैं

जमाल तुम्हारा है यकसां हर दिल में तू रौशन
भरता हूँ मैं नूर 'बेनिशाँ' कासा ए शरर में मैं

आलमे दहर - दुनिया का दर्द, कासा ए शरर - किरणों का कटोरा

79.कहने सुनने के भी परे

कहने सुनने के भी परे जब मामलात निकल गए
इंतजार तुम्हारा करते करते कितने लम्हात निकल गए

कुछ तुमने कहा कुछ मैंने कहा कुछ कैफियत हुई तारी
तब दोनों ही चुप हो गए और हसरात निकल गए

बेदिल हो और बेपरवाह तुम्हें किसी की फिक्र नहीं
देखते ही देखते जाने कहाँ सब रिवायात निकल गए

चैन सुकून मिल जाता है जब तुम आते हो सामने
हम चुप रहे फिर कुछ लम्हा ए मुश्किलात निकल गए

बहुत मुद्दत के बाद में उसको जब मैंने देखा अपने घर
खैरो मकदम के जोश में मेरे मदारात निकल गए

सब कुछ तो मालूम है उसको जाने उसने ये किया क्या
गहरी नजर जो मुझपर डाली बड़े हसरात निकल गए

मुद्दतों बाद में जब तो आखिर उसका हुआ गुजर
थोड़ी देर बस रुके 'बेनिशाँ' वो करके दो बात निकल गए

मदारात - आवभगती की इच्छा, शहादत - पुनरीक्षण

80.जब ख्वाहिश हुई मकबूल मेरी

जब ख्वाहिश हुई मकबूल मेरी खुदनिसारी की
तमन्ना सारी तमाम हो गईं मेरी इख्तयारी की

मुझ में आकर मुझ में समा कर रहा बचा सब लिया लूट
पूरी हो गई हसरतें सारी इस तरह बेकरारी की

बहुत शौक था मुझको जानाँ अपने पर था बड़ा गुमान
हस्ती मेरी लूटने की फिर उसने तैयारी की

जाँ भी लूटी दिल भी लूटा फिर अपना सा बना लिया
कैसे छेड़ दूँ मैं यह किस्सा कहानी गिरफ्तारी की

बहुत वक्त से हूँ प्यासा मैं भटका मुद्दतों सहरा में
नजरअंदाज कर दी शिद्दत मेरी इंतज़ारी की

जिंदगी अब तो हुई तमाम जान लबों पर आ गई
एक रात बस और रह गई अब तो बेकरारी की

मैं तो कुछ कर भी न पाया बस जान लुटा दी थी मैंने
चर्चा हर तरफ क्यों हो रही है 'बेनिशाँ' वफादारी की

माज़ी - भूतकाल